www.krishipravahika.com

कृषि प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका

e-ISSN: 2583 – 0430

कृषि-प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका, (2022) वर्ष 2, अंक 2, 1-2

Article ID: 148

सब्जी उत्पादन की प्रमुख चुनौतियाँ और उनका समाधान

रामेश्वर जांगु[1]*, गुरजीत सिंह[2], सौरभ यादव[1], प्रकाश[1] और सुमित कुमार[3]

[1]सब्जी विज्ञान विभाग
[2]पादप प्रजनन और आनुवांशिकी विभाग
[3]शस्य विज्ञान विभाग
पंजाब कृषि विश्वविद्यालयए लुधियाना, पंजाब

भारत एक कृषि प्रधान देश है जहाँ 60 प्रतिशत लोगों की आजीविका आज भी कृषि पर निर्भर है। कृषि आधारित अर्थव्यवस्था में सब्जी उत्पादन एक अत्यंत महत्वपूर्ण घटक है। एक स्वस्थ मनुष्य को प्रतिदिन 300 ग्राम सब्जियों (125 ग्राम पत्तीवाली, 100 ग्राम जड़वाली तथा 75 ग्राम अन्य सब्जियां) की आवश्यकता पड़ती है । सब्जियाँ अन्नवाली फसलों की तुलना में कम अवधि में तैयार होती है और प्रति इकाई क्षेत्र में से अधिक उत्पादन देती हैं। सब्जियों की खेती में किसान भाईयों को बीज चुनाव व पौध उगाने से लेकर फलत् में आने तक प्रत्येक अवसर पर उचित मार्ग दर्शन की आवश्यकता पड़ती है। उचित जानकारी के अभाव में वे सब्जियों की भरपूर पैदावार नहीं ले

इसकी प्रमुख चुनौतियाँ :-

- सब्जियों की खेती करने के वैज्ञानिक तकनीकों के ज्ञान का अभाव।
- उन्नत किस्मों की गुणवत्तायुक्त बीजों की अनुपलब्धता।
- पर्यावरणीय कारक व पर्यावरण परिवर्तन की समस्या।
- रोग-व्याधियों से समुचित बचाव के ज्ञान का अभाव।
- सब्जियों में पोषक तत्व प्रबन्धन का अभाव।
- सब्जी उत्पादन में समुचित जल प्रबंधन की कमी है।
- सब्जियों में सबसे बड़ी समस्या इसकी विपणन की आती है।

समाधान:-

- जमीन की कमी तथा घटता जोत को ध्यान में रखते हुए हमारे सामने सबसे बड़ी चुनौती है कि वैज्ञानिक विधि द्वारा हम खेती कर सब्जियों की पैदावार अधिकाधिक बढ़ाये तथा सघन कृषि प्रणाली में सब्जियों का समावेश करें।
- किसान भाई उन्नत किस्मों के बीज विश्वसनीय स्रोत से खरीदें। भारत में 85 प्रतिशत किसान स्वयं द्वारा पैदा किए हुए बीज का प्रयोग करते है। इसके लिए आवश्यक है कि किसान बीज उत्पादन की वैज्ञानिक जानकारी अवश्य प्राप्त करें। किसान विभिन्न कृषि अनुसंधान संस्थानों से प्रशिक्षण प्राप्त कर वैज्ञानिक तरीके से बीज उत्पादन की पहल अपने प्रक्षेत्र पर ही कर सकते हैं।
- संतुलित पोषक तत्वों के उपयोग से जहाॅ भरपूर उत्पादन होता है वहीं गुणवत्ता भी अनुकूल मिलती है। सब्जियों के उत्पादन में मुख्य तत्वों के साथ-साथ सूक्ष्म तत्वों के प्रयोग पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता होती है। रासायनिक उर्वरकों के प्रयोग के साथ सड़ी हुई गोबर की खाद, वर्मी कम्पोस्ट एवं जैव उर्वरकों के प्रयोग से जहाॅ कि गुणवत्ता में वृद्धि होती है वहीं मृदा के स्वास्थ पर भी अनुकूल प्रभाव पड़ता है।
- जैसा कि ज्ञात है कि सब्जियों की खेती सुनिश्चित सिंचाई की सुविधा उपलब्ध होने पर ही संभव है । सब्जियाँ दोनों अवस्थाओं अधिक एव कम पानी की दशा के लिए काफी संवेदनशील होती है। इसके लिए आवश्यक है कि सब्जियों में जल प्रबंधन के लिए बूँद-बूँद या टपक सिंचाई (ड्रिप सिंचाई) एवं स्प्रिकलर सिंचाई की सुविधा सुलभ कराया जाये।
- हमारे देश में सब्जी विपणन की व्यवस्था बहुत अच्छी नहीं है इस दिशा में सब्जियों के तुड़ाई उपरान्त प्रबंधन, प्रशीतन कक्ष की व्यवस्था एवं

सर्वाधिकार © फ़रवरी, 2022; *कृषि प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका*

उचित विपणन प्रणाली पर ध्यान देने की आवश्यकता है। किसान भाई यदि सहकारी समीतियों की स्थापना कर लें तो इसके माध्यम से उनकी बहुत सारी समस्याओं का समाधान हो जायेगा और उनको उचित मूल्य पर गुणवत्ता युक्त बीज, रसायन के साथ कोल्ड स्टोरेज की सुविधा एवं विपणन में भी मदद मिलेगा।